ओम शान्तिः - दूर देश पर रहने वाले.... ओम शान्तिः प्रातः क्लास 13-7-67

नौ दूर देश की रहने वाली आत्मा देखने मे आती है नौ दूर देश का रहने वाला परमात्मा देखने मे आता है। एक है आत्मा और परमात्मा दोनो इन आंखो से देखे नही जा सकते है। और सब चीजे देखने मे आती है वह समझने मे आता है। यदि मनुष्य समझते है कि आत्मा अलग है शरीर अलग है। आत्मा दूर देश से आकर शरीर मे प्रवेश करती है। तुम हर एक बात को अच्छी रीती समझ रहे हो। कैसे आत्मा कैसे दूर देश मे से आती है। आत्मा भी देखने मे नही आती है। पढाने वाला बाप परमात्मा भी देखने मे नही आता है। ऐसे तो कब भी कोई सत्संग मे वा शास्त्रो मे सुना नही है। नौ कब सुना नौ देखा है। अब तुम जानते हो कि हम आत्मा देखने मे नही आती है। आत्मा को ही पढना है। आत्मा ही सब कुछ करती है। यह नई बाते है नौ। और कोई समझा नही सकते। परमपिता परमात्मा जो कि ज्ञान का सागर है वो भी देखने= मे नही आता है। निराकार फिर पढावे कैसे? आत्मा शरीर मे आती है नौ। वैसे ही परमपिता परमात्मा भी भागीरथ अथवा भाग्यशाली रथ मे आते है। इस रथ की भी अपनी आत्मा है। वो फिर अपनी आत्मा को देख थोड़ेई सकता है। बाप इस रथ के आधार से आकर बच्चो को पढाते है। आत्मा भी एक शरीर छोड कर फिर दूसरा लेती है। आत्मा की पहचान है। मगर देखी नही जाती है। वो तुम को पढा रहे है। यह है बिल्कुल ही नई बात। बाप भी कहते है कि मै भी ड्रामा प्लान अनुसार अपने ही समय पर आकर शरीर धारन करता हूं। नही तो तुम मीठे-2 बच्चो को दुःख से कैसे छुडाऊं? अब तुम बच्चे जागे हुये हो। दुनिया मे तो सभी सोये हुये है जब तक कि तुम्हारे पास आकर समझें। और ब्राह्मण बने। और सत्संगो मे तो कोई भी जाकर बैठ सकते है। यहाँ पर यूं ही ऐसे कोई आ नही सकते है। क्योंकि यह तो पाठशाला है नौ। बैरिस्टरी की परीक्षा मे तुम जाकर बैठो तो कुछ भी नही समझ सकेंगे। यह भी है तो बिल्कुल ही नई बात। पढाने वाला भी देखने मे नही आता है। पढने (आत्मा) वाले भी देखने मे नही आते है। आत्मा अन्दर ही अन्दर सुनती है धारन करती है। अन्दर-2 निश्चय होता जाता है कि यह बात तो बरोबर ठीक है। परमात्मा और आत्मा दोनो ही देखने मे नही आते है। बुद्धी से समझा जाता है कि हाँ मै आत्मा हूं। कई तो यह भी नहि मानते है। कह देते है कि यह तो नेचर है। इसका फिर वर्णन भी करते है। बाप आते ही है इस नालेज मे तुमको विजी करने। कर्म इन्द्रयों तो जो धोखा देती है उनको भी तो वश मे करना है। मुख्य तो है आंखे जो सब कुछ देखती है। आंखे ही बच्चा देखती है तो कहती है कि यह मेरा वा हमारा बच्चा है। नही तो समझें ही कैसे। कई तो फिर जन्म से ही अन्धे हो जाते है। तो समझाते है कि यह तुम्हारा भाई है। देख जो नही सकते है। बुद्धी से समझते

वास्तव मे जो अन्धे सूरदास हो वो ज्ञान को अच्छी तरह उठा सकेंगे। क्योंकि उनके पास तो धोखा देने वाली आंखे नहीं है। भल वो और कुछ काम कर नही सकेंगे। स्त्री को भी नही देखेंगे। दूसरे को देखेंगे तो उनकी बुद्धी जावेगी कि इनको छूवे यह करे। मगर आंखे ही नही है तो देखेंगे ही कैसे। तो बाबा कितना समझाते है कि कर्मइन्द्रयों को पक्का करना है। स्त्री को देखते है तो दिल हो आती है कि इनको हाथ लगावे यह करे छूवे, ऐसा करें? तो यह सब नही होना चाहिये। यही है शत्रु। कोई-2 तो बिल्कुल ही हाथ भी लगाने नही देते है। उस क्रिमिनल अर्थात बुरी दृष्टी से बहन को नही देखना है। भल भाई अपनी बहन को भाकी पहनेत है परन्तु बहन के ही ख्याल से। तुम भी तो बहन भाई हो नौ। बुरी दृष्टी का ख्याल नौ हो जरा सा भी। भल आज कल तो कलयुग है भाई-बहन की भी बुरी नजर हो जाती है वो भी ख्याल आ जाते है परन्तु ला मुआफिक भाई-बहनो की बुरी ख्यालात हो नही सकती है। हम बाप के बच्चे है। बाप [illegible] देते है कि तुम [illegible] हो तो यह ज्ञान हो जाता है कि तुम भाई बहन हो। हम [illegible] भगवान के बच्चे है निराकारी। फिर शरीर मे प्रजापिता ब्रह्मा जी द्वारा भाई-ब

इनसे अलग हूँ। इन कर्म इन्द्रियों से कर्म करती हूँ। मैं कर्म इन्द्रियाँ थोड़े ही हूँ। मैं तो इनसे न्यारी आत्मा हूँ। यह शरीर रिकार्ड से पार्ट बजाती हूँ। सो भी अलौकिक है। और कोई मनुष्य यह पार्ट नहीं बजाते है? तुम जानते हो। बार-2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। फिर वो ही बाबा हमारा टीचर भी है तो गुरु भी है। वो मनुष्य= साकारी बाप टीचर गुरु अलग-2 होते है। यह निराकारी तो एक ही बाप भी है तो टीचर और सतगुरु भी है। यहाँ बच्चों को अभी नई शिक्षा मिल रही है। बाप टीचर गुरु तीनों ही निराकारी है। उन भी निराकार आत्मा पढ़ते है। तभी तो समझा जीव नी आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल। मिलन फिर यहाँ पर ही होता है जब कि बाप को आकर पावन बनाना होता है। मूल वतन में आत्मायें जाकर मिलेंगी परन्तु वहाँ पर तो कोई खेल ही नहीं है। वो तो है अपना घर। जहाँ पर तो सब आत्मायें रहती है। अन्त में तो सभी आत्मायें वहाँ पर ही चली जायेगी। आत्मायें जो पार्ट बजाती आती है वो बीच में से वापस जा नहीं सकती है। अन्त तक ही पार्ट बजाना है। पुनर्जन्म लेते ही रहना है। तब तक जबकि सभी आ जावे सतोप्रधान से सतो रजो तमो में आ जाते है। फिर फिर झाड़ी में नाटक पूरा होता है। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान बनना है। बाप सभी बातें तो ठीक-2 समझाते है। भक्ति है ही उतरती ~~कला~~ का मार्ग। यह है सत्य। शिव सत्यम कहा जाता है ना। सत्य बोलने वाला। पुरुषोत्तम बनने लिये तो यही एक सतसंग होता है। बाप जब आवे तब उनके ज्ञान को है सतसंग कहा जाता है। बाकी तो सभी है कुसंग। गाया भी जाता है ना संग तारे कुसंग बोरे। कुसंग है रावण का। बाप कहते है कि मैं तो तुमको तार कर जाता हूँ फिर तुमको डुबोता कौन है? तमोप्रधानतुम कैसे बन जाते हो? वो भी बताना पड़ता है। सामने दुश्मन है माया। शिव बाबा है सज्जन। इनको गाया जाता है सीताओं का पति। यह महिमा कोई रावण की नहीं है। सिर्फ कहेंगे कि रावण है। बस। और कुछ नहीं। रावण को क्यों जलाते है वो भी कुछ पता नहीं है। बाप समझाते है कि यह रावण कितना जबरदस्त है। सो भी दुश्मन है। रावण दुश्मन और यह बाप सज्जन है। वो श्राप देते है बाप वर्सा देते रहते है। दुनियाँ इन बातों को नहीं जानती है। जब वो लोग रावण को जलाते है तो वहाँ पर भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते है कि रावण कौन है। कब आता है क्यों जलाते है। बलाइंड फेथ है ना। तुम बच्चों को तुम बच्चों को समझाने के लिये अथारटी है। जैसे वो शास्त्रों की अथारटी भी सुनते है ना फिर उनको सुनने वाले भी बहुत मस्त होकर सुनते है। उनके लिये पैसे देते रहते है। संस्कृत सिखाऊँ, गीता सिखाऊँ तो उनके लिये भी बहुत पैसे देते है। तुम जानते हो कि वो सब वेस्ट ऑफ टाइम वेस्ट आफ मनी, वेस्ट आफ एनर्जी करते रहते है। बाप भी कहते है कि तुम कितना वेस्ट आफ टाइम, वेस्ट आफ एनर्जी करते रहते हो। वेस्ट आफ मनी भी करते आये हो। जो इस ब्राह्मण कुल के होते है वो निकल आते है। इसलिये है तुम प्रदर्शनियाँ आदि भी करते रहते हो। फिर कोई यहाँ का फूल होगा तो आयेगा जरूर। यह झाड़ बढ़ता ही जाता है। बाप ने कलम लगाया है। एक से बढ़ता ही गया। पहले घर वाले, फिर मित्र सम्बन्धी, फिर आस-पड़ोस वाले आने लगे। फिर सुनते-2 कितने ही आ जाते थे। समझते है कि यह भी सत्संग है। परन्तु इसमें पवित्रता की मुसीबत थी। जिससे ही हंगामा हो गया। अभी तक भी होता रहता है। इसलिये ही गालियाँ देते रहते है। कहते है ना भगाते थे पटरानी बनाते थे। पटरानी तो स्वर्ग में बनेगी ना। जरूर फिर यहाँ पर ही पवित्र बनाया होगा। तुम सबको सुनाते हो यह महारानी महाराजा बनने लिये नालेज है। नर से नारायण बनने की सच्ची-2 कथा तुम सच्चे भगवान से सुनते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को कोई भगवान भगवती कह नहीं सकते है। परन्तु पुजारी लोग कह देते है। यूरोपियन्स भी गाड गाडेज कहते है। कृष्ण को भी लार्ड कृष्णा कहते है। यूरोपियन लोग लक्ष्मी-नारायण के चित्र को इतना नहीं मानते है जितना कृष्ण के चित्र को। कृष्ण के चित्र तो बहुत खरीद कर ले जाते है। ~~[illegible]~~ [illegible] हीरा बना है ना। महात्मा से भी बच्चों को ऊँचा रखा

रखते है। क्योकि महात्माओं नें तो पत्थर आद की कर फिर छौडा है।कोई2 ही बालब्रहमचारी होते
है;परन्तु उनको तो पता है कि काम क्रोध...क्यो होते है। छोटे बच्चे को पता नही रहता है।इसलिये
ही महात्मा से ऊंच कहा जाता है। इस लिये ही कृष्ण को जास्ती मान देते है। कृष्ण को देरव कर बहुत
खुश होते है कि यह भारत का लाड कृष्ण है। बच्चे भी कृष्ण को बहुत प्यार करते है कि इन जैसा पति
हमको मिले, इनसा बच्चा मिले। कृष्ण मे कशिश बहुत है। सतोप्रधान है नां। बाप कहते रहते है कि जितना
तुम याद मे रहेंगे उतना ही तम सतोप्रधान बन जावेंगे। और खुशी भी होगी। पहलेपहले सतोप्रधान थे
तो बहुत खुशी मे थे। फिर कला ये कम होती जाती है। गिरते ही जाते है। तुम जितना2 याद करते
रहेंगे तो खुब भी फील होगा। और तुम ट्रान्सफर होते जावेंगे। सतोप्रधान रजो सतो मे आते जावेंगे।
वो ताकत खुशी धारना बढ़ती ही जावेगी। इससमय तुम्हारी चढ़ती कला है। सिख लोग तो गाते भी
है कि तेरे भाने सर्व का भला।....तुम जानते हो कि अभी हमारी चढ़ती कला होती है याद से।
जितना याद करेंगे उतनी ही ऊंच चढ़ती कला होगी। सतोप्रधान तो बनना है नां। चन्द्रमा की भी लाईन
बन जाती है। फिर बढ़ते2 सम्पूर्ण बन जाताहै। तुम्हारी भी ऐस ही है। चन्द्रमा पर ग्रहण लगता है तो कहते
है कि दे दान तो छूटे ग्रहण। इस समय भारत पर पुरा ग्रहण लग चुका है भारत काला हो चुका है। अब
बाप कहते है कि पांच विकारों का दान दो तो छूटे ग्रहण। आखे भी कितना धोखा देती है।समझते
है कि हमारी बुधी टुटी जाती है स्त्री पर। हम जबकि ब्रह्माकुमार कुमारी बन गये तो फिर भाई-बहन हो गये।
फिर दिल होती है कि उन को हाथ लगाऊं। वो ब्रदली लव निकल जाता है।और स्त्री पने का क्रिम=
क्रिमनल लव आ जाता है। कोई2 कीदिल ऐसी आती है कि हम जबकि बाप के बन गये तो कोई भी हमको
बुरी दृष्टी से हाथ नही लगावे। फिर कहते है कि बाबा हमको यह हाथ लगाते है हमको यह अच्छा नही
लगता है।गुस्सा फिर ऐसा आता है कि मै चमाट मार दूं। परन्तु क्या करें। झगडा हो जावे= जावेगा।
ऐसे2 समाचार बाबा पास आते है बाबा फिर वाणी मे उचिलाते रहते है कि इससे तो तुम्हारी अवस्था
ठीक नही रहेगी। भल मुरली तो बहुत अच्छी चलाते है बहुतों को समझाते है परन्तु अवस्था कुछ भी नही।
ऐस भी बहुत है कि क्लास करने और करवाने वालो की क्रिमिनल नजर हो जाती है। बहुत ही खराब भी
हो जाते है।बाबा के पास समाचार तो सभी आते रहते है नां। बाप के बच्चो को खराब कर देते है।
एक तो इस पर केस भी हुआ था। कोर्ट में कहा कि यह तो मेरा ही पैदा किया हुआ फूल है नां।
सो हमने ही काम मे लाया तो हर्जा ही क्या है। इतनी तो गन्दी दुनियां है। बच्चे समझते है कि मंजिल
बहुत ऊंची है। बाप की याद मे सेल्वेट होकर रहना है। हम तो ब्रह्माकुमार कुमारी है हमारा तो रुहानी कनेक्शन
है। जो बाड कनेक्शन नही है।वैसे खून से तो सभी पैदा होते है। सतयुग मे भी ब्लड कनेक्शन=
कनेक्शन नही है। परन्तु वो शरीर योग बल से मिलता है। कहेंगे नगन होने बिना बच्चे कैसे पैदा होगें।
बाप कहते है कि वो तो है ही निरविकारी। नगन होते ही नही है। द्रोपदी ने कहा है कि नगन होने से
बचाओ। तो जब वहां पर भी देवी देवता तो रहते हैं। वहां पर भी अगर नगन होवे तो फिर तो वहां भी रावण
राज्य हो जावे। फिर तो यहां मे और वहां मे फर्क ही क्या रह जावे। यह सारी समझने की बातें है! बुधी द
दृष्टी के मिट जाने मे बहुत मेहनत लगती है। कालेज मे ब्लैक= लडके, लडकियां अगर इकठे पढ़ते है
तो बहुतो की ही क्रिमनल आये हो जाती है। बच्चो को समझाना है कि हम सब गाड फादर के बच्चे
है तो सभी आपस मे भाई-बहन हो गये नां। फिर हम बुरी नजर क्यो रखते है। सब कहते भी है कि हम
ईश्वर की सन्तान है। आत्मीय तो हुई निरविकारी सन्तान। बाप जब रचता है तो जरूर साकार से ही ब्राहमण
रचेंगे नां। वो हो गई ऐडाप्शन। गाड के बच्चे। मनुष्यों की बुधी मे यह बिलकुल ही नही आता है कि
प्रजापिता ब्रहमा द्वारा सृष्टी कैसे रची जावेगी।तुम प्रजापिता ब्रहमा की ब्र.कु.कु हो तुमने देरवा कि कैसे
रचना रची है। तुम्हारी ... किया जाता है ... भाई-बहन ... नजर की बहुत ख्याल

चाहिये। इसमे बहुतो को दिक्कत होती है।ऊंच पद पाना है तो,मेहनत तो करनी है नां। कोई-2 के अन्दर जैस कि चलता है। हाथ लगाने नही देते है तो मारते है। कामेशु क्रोधेशु तो है नां। बाबा के पास तो सब समाचार आता है न सं। लिखते है बाबा हमारी स्त्री तो जैसे कि सपनी है। यह सभी नाम इस समय के है। बाप कहते है कि पवित्र बनो। उनका भी नही मानते है। कोई-2 मानते है कोई नही भी मानते है। बडी मेहनत है। मेहनत बिना ऊंच पद ही कैसे मिलेगा। बच्चों को बहुत खबरदार रहना है। भाई-बहन का अर्थ ही है एक बाप के बच्चे। फिर भी बुरी दृष्टी क्यो जानी चाहिये। बच्चे समझते भी है कि बाबा ठीक ही कहते है। हमारी तो क्रीमनल दृष्टी जाती है। स्त्रीयों की भी जाती है तो पुरुषों की भी जाती है। फिर बाबा को रिपोर्ट करते है। ~~बाबा~~ बाबा हमको यह हाथ लगाते है। जबकि हम बाबा की हो गई तो फिर यह हमारा क्या लगता है। अन्दर मे समझते है कि बाबा ऐसा है। स्त्रीयां भी फेल होती है।पुरुष जास्ती। मंजिल है नां। नालेज तो बहुत सुनाते है जबकि चलन भी तो पवित्रता की हो नां। इसलिये बाबा कहते है कि सबसे जास्ती दुख देने ~~वाली~~= वाली धारवो देने वाली आंख है है। मुख मे भी पानी तभी आता है जबकि कोई चीज देखते है तो समझते है कि मै खाऊं। बच्चों को देख कर मोह उत्पन्न होता है।ऐसे भी नही कि आंखे धोखा देती है तो वो निकाल दें। शरीर को तो तंदरूस्त रखना है जो जितना रहे। आयु भी बडी योगबल से ही होगी। बाबा की भी आयु बडी होती जाती है। जन्मपत्री बताते है नां। बाबा की आयु भी 60वर्ष कहते थे।अब ब्रह्मा की आयु तो है 100वर्ष। तो आयु बडी हुई नां।यह राईट बात है। जितना योग मे पवित्र रहते है उनकी आयु बडी होती है। भारत मे जब पवित्र थे तो 150वर्ष आयु थी। वाईसलेस थे। विकारी होने पर आयु कम हो जाती है। अब तुमको आयु बढाने का पुरुषार्थ करना है। याद से तुम पवित्र सतोप्रधान बनेंगे।तुम जानते हो कि हमारी आयु बडी होगी। तो आंखे कितना नुकसान देने वाली है। मंजिल बहुत बडी है। ऐसे मत समझो कि हम बहुतो को हम तो समझाते है। नही जो कशिश होती है उसकी सम्भाल करनी है। सैकिंड मे जीवन मुक्ति पाने का उपाय तो बताते है परन्तु मेहनत करनी चाहिये। बाप कहते है मैने हथेली पर सौगात मे बहिश्त लाया है। परन्तु ऐसा फिर लायक बनना पडेगा। सतोप्रधान बन कर दिखाओं। याद है मुख्य। योग तो अनेको प्रकारो के होते है। याद एक ही प्रकार की होती है।अपने को आत्मा समझ बाप को भी बिन्दी समझ कर याद करना है। नंगे ही आये थे फिर नंगे ही जाना है।छी-2 आत्मायें तो वापस जा नही सकेगी। अपने को देखना होता है कि हमारी आत्मा पवित्र है। कहीं पर चलायमान तो नही होते है। बाबा युक्तियां तो सभी बताते रहते है। क्रीमनलआये रखने पर ऊंच पद पा नही सकते है। पुराने सम्बन्ध सभी छोडने है।काम क्रोध...और जरत पानी है। विश्व का मालिक बनना है तो मेहनत भी करनी पडेगी। अब तो देखते रहो कि इन इन्द्रयों पर हम विजय पाने का पुरुषार्थ करते रहते है। बाप जानते है कि अभी बच्चो मे तो बहुत काम चाहिये। तूफान तो आते ही रहेंगे। कोई 100वर्ष का बुढा भी होगा तो उनको भी माया तूफानो मे लावेगी। बच्चो को कितना खबरदार करते है।और फिर खुशी मे भी लाते रहते है। बाबा आप हम बच्चो को पढाने, पतित से पावन बनाने आते हो। तो अपने मे बच्चो गुण आद भी लाने चाहिये। बुरी दृष्टी नही रखनी चाहिये। वहां पर सतयुग मे कब भी क्रीमनलआये रहती नही है। क्रीमनलआये रावण राज्य मे होती है। हार्ट फेल नही होना है। इसमे तो बहुत ही बहादुरी चाहिये। बाप का बीडा बच्चो ने उठाया है नां।अब तुम बच्चे है यह जानते हो कि कृष्ण की आत्मा ही अन्त मे जाकर भागीरथ बनती है। जिसमे ही बाबा प्रवेश करते है। नाम तो वो ही हो नही सकेगा नां। नाम तो जरूर दूसरा ही होगा। वो ही नाम थोडेई होगा। बाप कहते है कि मै बहुत जन्मो के अन्त मे आकर इनमे प्रवेश करता हूं।तुम जानते हो कि बाप बिना स्वर्ग की स्थापना कोई कर नही सकता है। ओम